16

परिवार के साथ समाज कार्य

* *हेनरी रोज़ेरिआ*

प्रस्तावना

समुदाय में परिवार मूल संस्था होती है। यह वह प्राथमिक समूह है जिसमें सदस्य जन्म लेते हैं, उनका पालन-पोषण होता है, वे स्वरूप ग्रहण करते हैं, प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं और समाज में विभिन्न भूमिकाएँ निभाने और कार्य करने के लिए वहाँ उनका समाजीकरण होता है। अतः यह आवश्यक है कि परिवार की कुशलता बनी रहे। तथापि ऐसी अनेक समस्याएँ और मुद्दे होते हैं जो कि एक परिवार को प्रभावित करते हैं। इन समस्याओं का स्वरूप बहुलतावादी होता है। परिवार में एक व्यक्ति की समस्या या उन्नति अन्य लोगों को भी प्रभावित करती है। इसीलिए यह मानकर भी चला जाता है कि इन समस्याओं के कारण परिवार में ही निहित होते हैं तथा इन समस्याओं से निपटने के लिए परिवार के अन्य सदस्यों को भी शामिल करना होगा। अतः परिवार को एक प्रणाली के रूप में माना जाता है और परिवार में कोई भी अन्तःक्षेप करते समय इस नज़रिये को ध्यान में रखना होगा।

परिवार के साथ समाज कार्य सहायता परिवार को प्रणाली के रूप में देखने के नज़रिये पर ही आधारित है। इस व्यवसाय में ऐसी अनेक विधियाँ और कार्यनीतियाँ हैं जो परिवार की समस्याओं की बहुलता से निपटने के लिए प्रयोग में लाई जा सकती हैं। परिवारों में व्यक्तियों के साथ अलग-अलग कार्य करना भी संभव है और परिवार के सदस्यों के उन समूहों के साथ भी कार्य करने का विकल्प उपलब्ध है जिनकी समस्याएँ सामान्य हैं तथा ज़रूरतमंद परिवारों की सहायता करने के लिए समुदाय से संसाधनों का जुटाव करना भी संभव है। समाज कार्य व्यवहार की विभिन्न तकनीकें हैं जैसे परिवार चिकित्सा, संकट अन्तःक्षेप, वैवाहिक

* *डॉ. हेनरी रोज़ेरिओ, सेकरेड हार्ट कालेज, त्रिपुत्तर*

परामर्श और विवाह-पूर्व परामर्श जिनका प्रयोग विशिष्ट उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।

इस अध्याय में परिवार की समस्याओं की बहुलता, प्रणाली के रूप में परिवार, और परिवारों के साथ समाज कार्य व्यवहार में संभव अनेकों अन्तःक्षेपों के विषय में जानकारी देने का प्रयास किया गया है।

पारिवारिक समस्याओं की बहुलता (विविधता)

परिवार में बहुपक्षी समस्याएँ होती हैं। माता पिता और बच्चों के बीच समस्याएँ होती हैं। बच्चे यह शिकायत कर सकते हैं कि माता पिता उनके बीच में पक्षपात करते हैं या अति संरक्षण करते हैं और माता पिता को बच्चों से आज्ञा का पालन न करने की या भावनात्मक प्रकोप की शिकायत हो सकती है। पति-पत्नी के बीच भी कई समस्याएँ हो सकती हैं जैसे बालकों का पालन-पोषण, जीवन शैली और ससुराल वालों के प्रति कर्तव्यों का पालन। कुछ स्थितियों में, परिवारों के सामने कोई बड़ा संकट आ सकता है जो इसके सदस्यों के बीच किन्हीं समस्याओं के कारण नहीं बल्कि कुछ ऐसी घटनाओं जैसे पति या पत्नी की मृत्यु या नौकरी से अकस्मात छँटनी के कारण हो सकता है। इस प्रकार समस्याओं के बहुल आयाम होते हैं।

चूँकि परिवारों में बहुपक्षी समस्याएँ होती हैं, परिवार के किसी एक सदस्य की समस्याएँ अन्य सदस्यों को भी प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए एक व्यक्ति की सहायता करने की प्रक्रिया में पूरे परिवार को या कम से कम समस्या से संबंधित सदस्यों को शामिल करना आवश्यक होता है। उदाहरणार्थ, शराबी व्यक्तियों का उपचार करने वाले अधिकांश व्यसन छुड़ाने वाले केन्द्रों में परिवार चिकित्सा सत्रों के दौरान उस व्यक्ति की पत्नी या माता पिता को भी उपस्थित रहने के लिए कहा जाता है। कुछ स्थितियों में, परिवारों के साथ समाज कार्य के दायरे में परिवार प्रणाली से बाहर जा कर आस पड़ोस या कुल समुदाय को भी शामिल किया जा सकता है। हम एक ऐसी युवा पत्नी का केस लेते हैं जिसके पति की एड्स के कारण मृत्यु हो गई और अब उसे तीन बच्चों की देखभाल करनी है। इस परिवार के साथ समाज कार्य करने में कई कार्य शामिल होंगे जैसे परिवार के सभी सदस्यों के एच.आई.वी. परीक्षण के लिए उनके खून की जाँच, माँ के लिए रोज़गार का अवसर उपलब्ध कराने हेतु समुदाय संसाधनों का जुटाव और

बालकों के शैक्षिक शुल्कों के लिए आर्थिक सहायता करना। इस प्रकार परिवारों की समस्याएँ बहुपक्षी होती हैं। इनमें से कुछ समस्याओं को आगे प्रस्तुत किया जा रहा है। यद्यपि भली-भाँति समझाने के लिए इन समस्याओं को श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है, यथार्थ में ये एक प्रणाली के रूप में परिवार की समस्याओं के रूप में विद्यमान होती हैं और इसलिए परिवार में सभी को प्रभावित करती हैं।

परिवार प्रणाली में बच्चों के सामने आने-वाली समस्याएँ

- कुछ माता पिता अपने बच्चों का ज़रूरत से ज़्यादा सरंक्षण करते हैं और उनमें अत्यधिक आसक्त रहते हैं। ऐसे बच्चें अपने माता पिता के साथ बंधा हुआ महसूस करते हैं और अपनी वैयक्तिकता खो देते हैं।

- इसके विपरीत कुछ माता पिता अपने बच्चों से उदासीन रहते हैं। वे उनकी अवहेलना कर सकते हैं या यहाँ तक कि बालकों को नकार भी देते हैं ऐसी स्थिति में बच्चे विमुख और विरक्त हो जाते हैं।

- कुछ माता पिता बालकों से गाली-गलौज करते हैं या मार-पिटाई करके दंडित करते हैं। जब माता पिता इस प्रकार से अक्सर दंडित करते हैं तो बच्चे ज़िद्दी और आक्रामक हो जाते हैं।

- कुछ माता पिता एक बच्चे की अवहेलना करते हैं और दूसरे से पक्षपात का प्रदर्शन करते हैं। कुछ अन्य माता पिता इसी के जैसा दूसरा रुग्ण व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। वे एक बालक की दूसरे से तुलना करते हैं और इस तरह उनको नीचा दिखाने का प्रयास करते हैं। पक्षपात और तुलना करने का यह व्यवहार बालकों के स्वाभिमान को कम करता है।

- कुछ माता पिता अत्यधिक अधिकारवादी होते हैं तो कुछ अत्यधिक निर्बंध होते हैं। अत्यधिक अधिकारवाद से तो बालक की स्वतंत्रता व स्वायत्तता दब जाती है वहीं अत्यधिक निर्बंधता से वे अनुशासनहीन और आत्मनियंत्रणहीन हो जाते हैं।

- कुछ बालकों के माता पिता को उनसे अत्यधिक अपेक्षाएँ होती हैं। वे अपने बच्चों को शिक्षा और जीविका के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति प्राप्त करने के

लिए बाध्य करते रहते हैं। ऐसे बालक इस प्रकार के दबाव का सामना नहीं कर पाते और उनमें चिंता और घबराहट पैदा हो जाती है।

परिवार प्रणाली में माता पिता के सामने आने वाली समस्याएँ

- अनेक माता पिताओं के बालक ज़िद्दी और आज्ञा का पालन न करने वाले होते हैं। ये बालक परिवार के दिशा-निर्देशों, नियमों और मानदंडों की अवज्ञा करते हैं। उनके माता पिता निराशा का अनुभव करते हैं। कुछ माता पिता ऐसे बालकों की माँगों के आगे हथियार डाल देते हैं।

- जब बच्चे किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं, तो उनके माता पिताओं को उनसे व्यवहार करने में कठिनाई होती है। यौवनारंभ से जुड़े हुए जैविक परिवर्तन और उससे संबंधित भावनात्मक अस्थिरता और बढ़ती यौन भावनाएँ किशोरों में "तूफान और तनाव" उत्पन्न करती हैं। कुछ माता पिता अपने किशोर बालकों के आकस्मिक भावनात्मक विस्फोटों का सामना नहीं कर पाते।

- अधिकांश किशोर बालक साथ समूह संबंधों को विकसित कर लेते हैं और उनके शौकों, वेशभूषा के तरीकों और रुचियों पर इन साथी समूहों का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। वे धीरे-धीरे अपने माता पिता से निर्मुक्त हो जाते हैं। अनेकों माता पिता इन परिवर्तनों को स्वीकार नहीं कर पाते और न ही उनके अनुकूल बन पाते हैं।

- कुछ किशोर बालक प्रेमोन्माद के वशीभूत हो जाते हैं और प्रेम संबंध प्रारंभ कर देते हैं। इनमें से कुछ अपने परिवारों को छोड़ कर भाग भी जाते हैं। ऐसे व्यवहारों से परिवार कमज़ोर हो जाते हैं।

- अति होने पर, कुछ युवा लोग पदार्थ दुरुपयोग के और निर्नैतिक यौन व्यवहार के शिकार बन जाते हैं। माता पिता अकस्मात ही संरक्षण प्रदान करने में असमर्थ हो जाते हैं।

- जब बच्चे वयस्क हो जाते हैं, विवाह करके अपने स्वयं के परिवार प्रारंभ करने के लिए माता पिता को छोड़ कर चले जाते हैं तब अनेकों माता पिता खाली घोंसला संलक्षण का अनुभव करते हैं।

- कुछ बच्चे माता पिता की वृद्धावस्था में उनका परित्याग कर देते हैं। ऐसा कई कारणों से होता है जैसे निर्धनता, ससुराल वालों से तनावपूर्ण संबंध या संपत्ति संबंधी झगड़े। इस अवस्था में माता पिता को यदि वृद्धों के लिए गृह जैसी सामाजिक सहायता प्रणालियों से कोई सहायता प्राप्त न हो तो उनकी स्थिति बड़ी दुखदाई हो जाती है।

परिवार प्रणाली में पति और पत्नी के बीच समस्याएँ

- कुछ परिवारों में पति पत्नी एक दूसरे से मार पिटाई या गाली गलौज करते रहते हैं। गाली गलौज करना अधिक प्रचलित है और यह भी मार पिटाई के समान चोट पहुँचाता है। इसके कारण अंततः आपसी संचार और संबंध टूट जाते हैं।

- अक्सर पति पत्नी के झगड़े अपनी अपनी रुचियों, धारणाओं, मूल्यों और जीवन की वरीयताओं पर आधारित होते हैं। उनमें से कोई भी अपने विचार दूसरे पर थोपने की कोशिश करता है। इसके कारण मनोमालिन्य उत्पन्न होता है और कभी-कभी प्रतिशोध की उत्पत्ति भी होती है।

- विवाहेतर संबंध और इससे संबंधित संदेह के कारण परिवार में तबाही मच जाती है। एक दूसरे के प्रति विश्वास, प्रेम और सरोकार भंग हो जाता है। इसके स्थान पर अविश्वास, संदेह, क्रोध का उबाल और प्रतिशोध की भावना उत्पन्न हो जाती है।

- कोई कोई पति या पत्नी स्थायी यौन समस्याओं से ग्रस्त हो जाते हैं जिसके कारण वे अपने पति या पत्नी की शारीरिक आवश्यकताओं की संतुष्टि के काबिल नहीं रह जाते। यौन समस्याओं से जुड़ी सामाजिक निंदा की आशंका पति अथवा पत्नी को पारिवारिक चिकित्सक या डॉक्टर के पास जाने से रोकती है और इस प्रकार यह समस्या अनसुलझी रह जाती है। यद्यपि कुछ परिवारों में हो सकता है कि इस समस्या को खोलकर सामने न लाया जाए परन्तु यह किसी अन्य मुद्दे के रूप में उभर सकती है।

संकटग्रस्त परिवार

- कभी-कभार कुछ परिवारों पर संकट का हमला हो जाता है। यह संकट तब और भी तीव्र हो जाता है जब परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो जाती है।

- अपराध करने पर कारावास में दीर्घकाल के लिए बंद किया जाना, परिवार के एकमात्र कमाऊ व्यक्ति की अकस्मात ही नौकरी छूट जाना और बच्चों को नशे की दवाओं की लत लग जाना कुछ ऐसी संकटपूर्ण घटनाएँ हैं जो किसी परिवार की स्थिति को डाँवाडोल कर सकती हैं।

परिवार प्रणाली की गतिकी

परिवार एक गतिशील संस्था है। स्वयं को अन्य संस्थाओं में हो रहे परिवर्तनों के अनुकूल बनाने की प्रक्रिया में इसमें काफी परिवर्तन हुए हैं। परिवार सिर्फ एक गतिशील संस्था ही नहीं है बल्कि यह तो एक प्रणाली का भी गहन करती है। एक प्रणाली के रूप में परिवार की उप-प्रणालियाँ भी होती हैं जैसे पति/पत्नी, माता पिता और बालक। ये उप-प्रणालियाँ एक दूसरे से आपस में संबंधित होती हैं और लगातार एक दूसरे से परस्पर क्रिया भी करती हैं। इस प्रकार किसी एक प्रणाली में होने वाली समस्या या प्रगति अन्य उप-प्रणालियों पर और समग्र प्रणाली पर भी अपना प्रभाव छोड़ती हैं। परिवार प्रणाली में किसी अन्तःक्षेप की योजना बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाना जरूरी है।

परिवार प्रणाली में विभिन्न समूह प्रक्रियाएँ होती रहती हैं। परिवार के सदस्यों के बीच भावनात्मक लगाव एक ऐसी ही गतिकी है। इस लगाव द्वारा ही परिवार के सदस्यों में एक दूसरे को समझने और स्वीकारने के लिए आदर्श जुड़ाव पैदा होता है। यह लगाव ही दीर्घ काल तक मूल्यों, धार्मिक विश्वासों, परम्पराओं और मानकों को बनाए रखने के लिए आधार के रूप में काम करता है।

परिवार में देखी जाने वाली दूसरी गतिकी है, इसकी परिवेश के अनुकूल बन जाने की क्षमता। यद्यपि परिवार प्रमुख संस्था रहती है परन्तु यह शिक्षा, व्यवसाय, सरकार, धर्म और मनोरंजन के साथ सह अस्तित्व में रहती है। परिवार के सदस्य किसी न किसी तरह से इन संस्थाओं से जुड़े होते हैं। इस भाँति परिवार अपने

परिवेश में हो रहे परिवर्तनों के संबंध में अपने मानकों, प्रचलनों और मूल्यों में संशोधन करना सीखता है।

परिवार में देखी जाने वाली एक अन्य महत्वपूर्ण गतिकी है इसकी स्थिरता और समन्वय। परिवार अपने सदस्यों को स्थायित्व प्रदान करते हैं। प्रत्येक सदस्य पति, पत्नी या माता पिता अथवा बालक की एक पूर्व निश्चित भूमिका होती है। चूँकि प्रत्येक व्यक्ति की भूमिकाएँ, कार्य और दायित्वों के बारे में दूसरे को स्पष्ट जानकारी होती है, परिवार में स्थायित्व बना रहता है। यह स्थायित्व परिवार में समन्वय के लिए बुनियाद का काम करता है।

जब परिवार में, ऊपर वर्णित इन प्रक्रियाओं में आंतरिक और बाह्य घटनाएँ व्यवधान डालती हैं तो परिवार प्रणाली में समस्याएँ आ जाती हैं। कुछ परिवार के सदस्यों में एक-दूसरे से भावनात्मक लगाव समाप्त हो जाता है और वे अलग होने का प्रयास कर सकते हैं। कुछ परिवार परिवेश के अनुकूल बन पाने में कठिनाई महसूस करते हैं और वे अलग थलग हो जाते हैं। कुछ परिवार का स्थायित्व और समन्वय समाप्त हो जाता है और वे निरंतर झगड़ना शुरू कर देते हैं। अंततः परिवारों की क्रिया बिगड़ जाती है और वे अपनी प्रासंगिकता और अस्तित्व का उद्देश्य ही खो बैठते हैं।

यदि परिवारों को उनकी कार्यात्मक स्थिति में वापस लाना है तो उपयुक्त अन्तःक्षेप आवश्यक है। इस अन्तःक्षेप का स्वरूप समग्र होना चाहिए और इसके परिवार के साथ एक प्रणाली के रूप में व्यवहार करना चाहिए। इस सदंर्भ में ही, समाज कार्य व्यवसाय की विभिन्न विधियाँ सुसंगत हो जाती हैं क्योंकि ये विधियाँ एक व्यक्ति, समूह और समुदाय के साथ कार्य व्यवहार करती हैं। परिवार प्रणाली की गतिकी ऐसी है कि यह पूरी प्रणाली के साथ कार्य करने वाले एक समेकित दृष्टिकोण को अनिवार्य बनाती हैं। आगे आने वाले अनुच्छेदों में परिवार प्रणाली में समाज कार्य की विभिन्न विधियों को लागू करने की जानकारी दी जाएगी।

समाज कार्य में अन्तःक्षेपी विधियाँ

1) परिवार व्यवस्था में व्यक्तियों के साथ समाज कार्य

परिवार के साथ कार्य करते समय, समाज कार्यकर्ता को कभी कभी परिवार के केवल किसी एक सदस्य के साथ ही अपनी अंतःक्रिया सीमित करनी पड़ती है।

कुछ समस्याएँ जैसे खराब शैक्षिक निष्पादन और बालकों के भावनात्मक विस्फोट या माता पिता की कुछ व्यवहार संबंधी समस्याएँ जैसे अधिकारवादी होना, अत्यधिक अपेक्षाएँ रखना या अति संरक्षण करना आदि के लिए शायद परिवार की अन्य उप प्रणालियों को शामिल करने की ज़रूरत नहीं हो। वैवाहिक झगड़ों के कुछ मामलों में, पति या पत्नी समाज कार्यकर्ता के साथ काम करने के विचार का विरोध कर सकता/सकती हैं। ऐसी स्थितियों में कार्यकर्ता को परिवार के एक सदस्य के साथ काम करने की ज़रूरत पड़ सकती है ताकि वह समस्या से निपट सके। सहायता की यह प्रक्रिया विभिन्न अवस्थाओं से गुज़रती हैं जिससे यह ज्ञात होता है कि इसको सुव्यवस्थित रूप से करना है।

व्यक्तियों के साथ काम करने की अवस्थाएँ

अध्ययन अवस्था

- व्यक्ति पर ध्यान दें। घनिष्ठता विकसित करें। एकांकी संबंध में यह बहुत महत्वपूर्ण है।
- उनकी समस्याओं को सुनें। सक्रिय रूप से सुनें। उनके साथ सहानुभूति रखें।
- नेत्र संपर्क बनाए रखें। गैर-शाब्दिक संचार और उस व्यक्ति की शरीर शैली को ध्यान से देखें।
- समस्याओं से निपटने के लिए आवश्यक सभी ब्यौरों को एकत्रित करें । इन ब्यौरों में उस व्यक्ति का व्यक्तिगत डाटा, उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और उसके व्यक्तित्व के मनो-सामाजिक पहलुओं पर आवश्यक सूचनाएँ शामिल हों।

समस्या निर्धारण अवस्था

- समस्या, समस्या के प्रारंभ, उसकी आवृत्ति और विस्तार से संबंधित सूचना एकत्र कीजिए।

- समस्याओं से निपटने के लिए असंगत क्षेत्रों में तहकीकात मत कीजिए। ऐसे गोपनीय मामलों के बारे में उत्सुकता मत प्रदर्शित कीजिए जो समस्या के निपटाने के लिए प्रासंगिक नहीं हैं।

- जिस समस्या को निपटाना है उसकी या जो सकारात्मक व्यवहार सीखा जाना है उसकी पहचान कीजिए। सामान्यतः नकारात्मक व्यवहार को दूर करने की अपेक्षा नवीन सकारात्मक व्यवहार विकसित करना ज्यादा आसान होता है।

- सम्पूर्ण समस्या को मत लीजिए। इसके उस हिस्से को लीजिए जिसका प्रबंध करना/सुलझाना संभव है, जिसे शीघ्र ही निपटाना है और सबसे बढ़कर, उस पहलू को लीजिए जिसमें सफलता मिलने की काफी संभावना है। सफलता की प्राप्ति से समस्याग्रस्त व्यक्ति में और अधिक जटिल समस्याओं को निपटाने के लिए आत्मविश्वास उत्पन्न होगा।

- नियमित अंतरालों पर उस व्यक्ति को कही गई बातों का सारांश निकालिए। उसकी समस्या के विषय पर ही नहीं बल्कि उसकी भावनाओं के बारे में भी समानुभूति से प्रतिक्रिया कीजिए।

सहायता करने की अवस्था

- विकल्पों की समीक्षा करने के पश्चात् अन्तःक्षेपी विधि का चयन कीजिए। व्यक्ति को प्रोत्साहित कीजिए कि वह भिन्न रूप से विचार करे।

- अन्तःक्षेप को कार्यान्वित कीजिए।

- व्यक्ति को इस योग्य बनाइए कि वह अपनी समस्या को सुलझाने वाले व्यवहार का दायित्व ले सके। नया व्यवहार सीखने से सम्बद्ध चुनौतियों की पहचान करने में या नकारात्मक व्यवहार को छुड़ाने में उसकी मदद कीजिए।

- अड़चनों और हानियों का अंदाज़ा लगाने में उसकी मदद कीजिए।

- उसकी उन्नति को मॉनीटर कीजिए। व्यवहार सूचकों को विकसित कीजिए ताकि वह समय समय पर अपनी प्रगति को मॉनीटर कर सके।

- अन्तःक्षेप के सभी पहलुओं की समीक्षा कीजिए। यदि अन्तःक्षेप काम नहीं कर रहा है तो अन्तःक्षेप की जाँच कीजिए और उसके कुछ लक्षणों में परिवर्तन कीजिए।

समाप्ति अवस्था

- सहायता प्रक्रिया की समाप्ति सावधानीपूर्वक और धीरे-धीरे करनी चाहिए। निर्णय, उस व्यक्ति से परामर्श करके ही लेना चाहिए जिसकी आप सहायता कर रहे हैं।

- नए सकारात्मक व्यवहार के विरामों, सुदृढ़ीकरण को सुनिश्चित करने के लिए अनुवर्ती क्रिया की योजना बना लीजिए।

- जब भी आवश्यक हो सतत् उपलब्धता के बारे में आश्वस्त कीजिए।

2) परिवार प्रणाली में समूह के साथ समाज कार्य

अपने बालकों का पालन पोषण करते समय बहुत से माता पिता कुछ सामान्य समस्याओं का अनुभव करते हैं। इसी प्रकार बालकों या पति पत्नी को भी इसी प्रकार की कुछ सामान्य समस्याएँ हो सकती हैं। ऐसी स्थितियों में समूहों में उनकी सहायता करना अधिक लाभप्रद होगा न कि एक एक व्यक्ति की अलग अलग सहायता करना। उदाहरण के लिए, यदि बहुत से माता पिताओं का एक समूह यह अनुभव करता है कि उन्हें बच्चों की देखभाल के बेहतर तरीके सीखने की जरूरत है तो यह अधिक उपयोगी होगा कि उन्हें एक समूह में एकत्रित किया जाए और इस योग्य बनाया जाए कि वे अपनी भावनाओं के बारे में खुलकर विचार विमर्श कर सकें और एक दूसरे के अनुभवों से सीख सकें। इसी तरह से, जो बालक अपराधी व्यवहारों या चिड़चिड़ेपन एवं बदमिजाज़ी की समस्या के निदान के लिए भेजे गए हैं वे यदि अपनी जैसी समस्या से ग्रस्त अन्य बालकों से भी मिले तौ उन्हें बहुत लाभ होगा और वे इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए एक साथ मिलकर प्रयास कर सकेंगे।

इसी सदंर्भ में, परिवारों के साथ समाज कार्य व्यवहार करते समय समूहों के साथ काम करना महत्वपूर्ण बन जाता है। समूहों में मिलने से सदस्यों को सीखने के अनुभव प्राप्त होते हैं, अपने अपने अनुभवों को बाँटने के अवसर मिलते हैं, और मिलकर समस्या का समाधान करना संभव हो जाता है। सदस्यों को व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता के मार्गदर्शन में आत्मविश्वास उत्पन्न हो जाने का अवसर मिल जाता है।

समूह के साथ काम करने की अवस्थाएँ

अध्ययन अवस्था

- सामान्य समस्याएँ, आवश्यकताएँ और अपेक्षाएँ रखने वाले सदस्यों का समूह बनाइए। (उदाहरण के लिए ऐसे माता पिताओं के समूह जो बालकों के पालन पोषण के बेहतर तरीके सीखना चाहते हैं)।
- आयु, शिक्षा और व्यवसाय की दृष्टि से एक समान समूह बनाना अधिक उचित होगा।
- बैठने की व्यवस्था आरामदायक हो और बाहर के शोर से ध्यान भंग न हो ऐसे ब्यौरों का ध्यान रखिए। गोल समूह में बैठना उपयुक्त होगा।
- समूह सदस्यों के साथ विचार विमर्श कीजिए और उनकी चिंता का मुख्य विषय क्या है इसका पता लगाइए। उनकी चिंता के आधार पर लक्ष्य तैयार कीजिए।
- लक्ष्यों के बारे में स्पष्ट रूप से जानकारी दीजिए और उनके कार्यों या गतिविधियों में परिवर्तित कीजिए। यदि समूह का लक्ष्य बच्चों के लालन पालन के बेहतर तरीके सीखना है तो इससे संबंधित जानकारी, कौशलों और मनोवृत्तियों के बारे में योजना बनाइए। तत्पश्चात् इस आवश्यकता के आधार पर विषय, प्रसंग, उप प्रसंग और प्रत्येक बैठक के दौरान होने वाली गतिविधियाँ तैयार कीजिए।

सहायता करने की अवस्था

- सामूहिक गतिविधियाँ आयोजित कीजिए। ये गतिविधियाँ लक्ष्य प्राप्ति के महत्व के क्रम में व्यवस्थित करनी चाहिए।

- मूलभूत समूह प्रक्रियाएँ जैसे, सहभागिता, हम एवं हमारे की भावना, भावनात्मक सहयोग, संपुष्टि और स्वीकृति को मॉनीटर करके अनुकूल समूह सदस्यता को सुनिश्चित कीजिए।
- सदस्यों को प्रोत्साहित कीजिए ताकि वे अपने विचारों, भावनाओं, मनोवृत्तियों, दृष्टिकोणों और जानकारी को मुक्त रूप से अभिव्यक्त कर सकें।
- इसके साथ-साथ सदस्यों को प्रभुत्व दिखाने, आलोचना करने और उपदेश देने के व्यवहारों का प्रदर्शन करने की अनुमति मत दीजिए। उन्हें यह समझाइए कि ऐसें व्यवहार करना समूह की क्रियाविधि के लिए हानिकारक होगा।
- नई जानकारी और व्यवहार अर्जित करने के संदर्भ में प्रत्येक सत्र को पिछले और आगामी सत्रों से जोड़ते जाइए। इससे सदस्य नवीन कौशलों को सीख सकेंगे।
- नई जानकारी को व्यवहार में लाने के लिए प्रोत्साहन दीजिए। आप सदस्यों को गृह सत्रीय कार्य दे सकते हैं।
- उनको इस योग्य बनाइए कि वे नए व्यवहारों को यथार्थ जीवन स्थितियों में प्रयुक्त कर सकें। उनसे कहिए कि वे ऐसे अनुभवों का रिकॉर्ड बना लें।
- सदस्यों के गृह सत्रीय कार्यों की समूह में समीक्षा कीजिए।
- सदस्यों को प्रोत्साहित कीजिए कि वे समूह शिक्षा के प्रभावों की, माता पिता के रूप में अपने अपने जीवन में भागीदारी करें। उदाहरणार्थ उन माता पिताओं का समूह जो बच्चों का पालन पोंषण के बेहतर तरीके सीखने पर काम कर रहा है, अपने बालकों के साथ संबंध के बारे में अपने नवीन अनुभवों की भागीदारी करेगा।
- पुनः आश्वासन के साथ उनको प्रत्युत्तर दीजिए।

समाप्ति अवस्था

- व्यक्तियों को तथा समूह को भी उनकी अपनी अपनी प्रगति के बारे में प्रतिपुष्टि दीजिए। इससे सदस्यों में नए व्यवहार सीखने की अपनी क्षमता के बारे में आत्मविश्वास उत्पन्न होगा।

- यदि अनुवर्ती क्रिया आवश्यक है तो अनुवर्ती बैठकों की रीति की योजना बनाइए।
- सदस्यों को इस बात के लिए प्रोत्साहित कीजिए कि वे कार्यकर्ता से या अन्य सदस्यों से संपर्क बनाए रखें क्योंकि हो सकता है कि कभी भावनात्मक सहयोग की जरूरत पड़ जाए।

3) परिवार प्रणाली के लिए समुदाय के साथ काम करना

परिवार का अस्तित्व पृथकता में नहीं बल्कि समुदाय में होता है। समुदाय परिवार के लिए आधारभूत सहयोग पद्धति है। परिवार के सदस्य समुदाय में अन्य संस्थाओं के भी सदस्य होते हैं। उदाहरणार्थ, एक परिवार में पिता किसी उद्योग में और माता किसी सरकारी उद्यम में कार्य कर रहे हो सकते हैं। बच्चे किसी स्कूल या कॉलेज में पढ़ रहे होते हैं। इसके अलावा वे लोग किसी विशिष्ट धर्म के सदस्य हो सकते हैं और किसी विशिष्ट मौहल्ले पड़ोस के निवासी हो सकते हैं।

परिवार की कुछ समस्याएँ समुदाय में दूसरी संस्थाओं में उनकी भूमिका को प्रभावित करेंगी और इन संस्थाओं की कुछ समस्याएँ परिवार की गतिकी को प्रभावित करेंगी। उदाहरण के लिए परिवार में पिता जिस उद्योग में काम कर रहा है वह बंद हो सकता है और उसकी नौकरी समाप्त हो सकती है। बेटे के कॉलेज परिसर में उसके द्वारा किए गए अनुशासनहीन व्यवहार के कारण उसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है। एक दुखपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो सकती है जब किसी निर्धन परिवार के एकमात्र कमाऊ सदस्य की किसी दुर्घटना में मृत्यु हो जाए और परिवार बेसहारा हो कर सड़क पर आ जाए। इन सभी स्थितियों में परिवार को फिर से बनाने और सहायता करने की प्रक्रिया में समुदाय की सहायता की ज़रूरत पड़ती है। ऐसे परिवारों की मदद के लिए कार्यकर्ता को समुदाय में उपलब्ध संसाधनों को जुटाना पड़ता है। इस तरह के संदर्भ में ही समुदाय के साथ समाज कार्य व्यवहार परिवार व्यवस्था के पक्ष में प्रासंगिक बन जाता है।

समुदाय कार्य में विकल्प

- कुछ परिवारों की एक सामान्य समस्या हो सकती है और समुदाय संसाधनों को जुटा कर इसका समाधान संभव कर सकता है। उदाहरण के लिए

कार्यकर्ता कुछ ऐसी गृहणियों के साथ काम कर रहा होता है जिनकी मुख्य समस्या यह है कि वे कोई नौकरी नहीं कर सकती क्योंकि घर पर उनके छोटे छोटे बच्चों की देखभाल करने वाला कोई नहीं है। इन महिलाओं को परिवार में अतिरिक्त आय की अत्यंत आवश्यकता है। वे कौशलयुक्त हैं और उनके लिए नौकरी भी उपलब्ध है। ऐसी स्थिति में यदि समुदाय में बालकों के लिए एक दिवस देखभाल केन्द्र (डे केयर सेंटर) चलाने की व्यवस्था कर दी जाए तो यह इन परिवारों के लिए बहुत लाभदायक होगा। इस प्रकार कार्यकर्ता का समुदाय संसाधनों को जुटाने का प्रयास बहुत से प्ररिवारों की समस्या को सुलझा देगा।

- ऐसी स्थिति की कल्पना कीजिए जहाँ परिवार के कमाऊ सदस्य की नौकरी छूट गई है। वह कोई कौशलयुक्त श्रमिक भी नहीं है। ऐसी हालत में कार्यकर्ता उस व्यक्ति का समुदाय में किसी व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण संस्था से संपर्क करा सकता है जहाँ वह जीविका कौशलों को सीख सके। बाद में कार्यकर्ता ही समुदाय में किसी बैंकिंग संस्था से उस व्यक्ति के लिए स्व-रोज़गार ऋण की व्यवस्था करवा सकता है।

- कभी-कभी कार्यकर्ता को कुछ परिवारों के ऐसे बालकों की ओर से बोलना होता है जो या तो अनाथ हैं या जो एकल माता पिता वाले परिवार से हैं। इन बालकों को बालकों के लिए बनी आवासीय संस्थाओं में प्रवेश और शुल्क में छूट की ज़रूरत पड़ती है। उसके सामने यह स्थिति आ सकती है कि जहाँ बालक अपने ठहरने, प्रशिक्षण के लिए शुल्क दे पाने योग्य नहीं होते या प्रवेश की कसौटी के संदर्भ में उनमें पात्रता नहीं होती। ऐसी स्थिति में, कार्यकर्ता बालक को समुदाय में छात्रवृत्ति दिलवाने में या प्रवेश की कसौटी पर समझौते की बातचीत करके निश्चित रूप से प्रवेश दिलवाने में सक्रिय भूमिका निभा सकता है।

इन सभी स्थितियों में कार्यकर्ता को परिवार के कुछ सदस्यों की सहायता करने के लिए समुदाय के साथ काम करना और इसके संसाधन को जुटाना होता है।

4) संकट अन्तःक्षेप

किसी परिवार में अनपेक्षित रूप से किसी भी रूप में संकट आ सकता है जैसे पति, पत्नी या किसी बालक की मृत्यु, विवाहेत्तर संबंध, पति या पत्नी का लंबे

समय के लिए कारावास या परिवार के किसी बालक को नशीली दवाओं का व्यसन होना। किसी परिवार के जीवन में यह एक निर्णायक अवधि होती है। इससे परिवार की स्थिरता और सामंजस्य भंग हो जाता है और परिवार के सदस्यों की सुरक्षा और अस्तित्व दाँव पर लग जाता है। इस हालत में इन परिवारों को कुछ बाह्य सहायता की ज़रूरत होती है। संकट अन्तःक्षेप एक ऐसी ही प्रणाली है जिसका समाज कार्य व्यवहार में व्यापक रूप से प्रयोग होता है।

संकट अन्तःक्षेप की अवस्थाएँ

निर्धारण अवस्था

- संकटग्रस्त परिवारों के सदस्यों को इस योग्य बनाइए कि वे अपनी भावनाओं को व्यक्त करें। यह बहुत ज़रूरी है।
- संकट के आरंभ होने तथा संकट के कारणों के बारे में सरोकार रखना ज्यादा ज़रूरी नहीं है। इस पहलू पर ज्यादा समय व्यतीत न करें।
- परिवार पर संकट के प्रभाव का निर्धारण करें। दुष्क्रिया और क्षति की मात्रा और विस्तार का पता लगाइए।
- परिवार के सदस्यों की अहं शक्ति का मूल्यांकन कीजिए। सदस्यों की मूल प्रतिरक्षाओं और सामान्य अनुकूली प्रतिमानों का पता लगाइए।
- आंतरिक, अंतरा पारिवारिक और समुदाय संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित कीजिए।

अन्तःक्षेप अवस्था

- संकट और उससे निपटने के बारे में अधिक जानकारी प्रदान करके सदस्यों के संज्ञानात्मक नज़रिए को बढ़ाएँ।
- उन्हें इस योग्य बनाएँ कि वे दुःख, आघात और चिंता जैसी अपनी भावनाओं के प्रति ज़ागरूक हों। उन्हें आश्वासन और भावनात्मक सहयोग प्रदान करें।
- वस्तुपरक और आर्थिक सहायता जैसे संसाधन जुटाएँ और पड़ौसियों तथा रिश्तेदारों से सहायता प्राप्त करें। उन्हें इस योग्य बनाएँ कि वे ऐसे संसाधन खुद ही जुटा सकें और उनका प्रयोग कर सकें।

- समायोजन कौशल पुनः प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित कीजिए। ज़िन्दगी का सामना करने के लिए उन्हें नए रवैये और कौशल सिखाएँ।

समाप्ति अवस्था

- संकट से निपटते समय सदस्यों में जो परिपक्वता आ रही है उसकी ओर इंगित कीजिए। यह संकट अन्तःक्षेप का सकारात्मक परिणाम है।
- जब तक स्वस्थ संतुलन पुनः स्थापित न हो जाए अनुवर्ती क्रिया करते रहें। इससे परिवार को भावी खतरों का वास्तविकता से सामना करने में मदद मिलेगी।

5) **परिवार चिकित्सा**

परिवार चिकित्सा का उद्देश्य है, पूरे परिवार के लिए जीवनयापन के संतोषजनक तरीके संस्थापित करना। परिवार को एक प्रणाली के रूप में माना जाता है और किसी कुसमायोजित व्यक्ति को परिवार प्रणाली के अंतर्गत उपचार प्रदान किया जाता है। यह माना जाता है कि परिवार में किसी एक व्यक्ति की समस्या इस तथ्य से पैदा होती है कि वह परिवार के अन्य सदस्यों के साथ किस तरह अंतःक्रिया करता है और अन्य सदस्य उसके साथ किस प्रकार अंतःक्रिया करते हैं। इसके कुछ उदाहरण हैं, नशाखोरी, विवाह संबंध का भंग होना और घरेलू हिंसा। इस संदर्भ में, यह आवश्यक होता है कि पूरे परिवार या जो लोग समस्या से सरोकार रखते हैं उनके साथ काम किया जाए। परिवार चिकित्सा एक ऐसी विधि है जिसका समाज कार्य व्यवहार में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है।

कार्यनीति

- संबंध विकसित कीजिए। परिवार प्रणाली का अध्ययन कीजिए।
- यह निर्धारित कीजिए कि परिवार अपनी समस्या स्वयं ही सुलझा सके इस कार्य में क्या बाधा है। परिवार के अंतर्गत तात्कालिक समस्या को सुलझा भर लेना ही काफी नहीं है।
- परिवार के सदस्यों को सिखाएँ कि वे अपनी नकारात्मक या सकारात्मक भावनाओं, इच्छाओं और आवश्यकताओं को खुलकर बताएँ।

- जब भावनाओं की विसंगतियों, शब्दों या कार्यों को नोट किया जा रहा हो तब अन्तःक्षेप कीजिए।
- सदस्यों को प्रोत्साहित कीजिए कि वे चिकित्सा के दौरान और बाद में भी अंतःक्रिया करें। यह दर्शाएँ कि सभी सदस्यों के बीच पूर्ण अंतःक्रिया का होना समस्या को सुलझाने के लिए किस प्रकार आवश्यक है।
- परिवार के सदस्यों की सहायता कीजिए ताकि वे अपनी उन धारणाओं, मूल्यों और अपेक्षाओं पर पुनर्विचार करें जिनको वे काफी समय से मानते आ रहे हैं और जो उनकी समस्या सुलझाने की प्रक्रिया को बाधित कर रहे हैं।
- समस्या को सुलझाने के लिए अनेकों नए-नए द्वार खोलिए। उनकी सहायता कीजिए जिससे वे अपनी समस्या को सुलझाने के उचित तरीके ढूँढ सकें। परिवार को सिखाएँ कि वे अपनी समस्याएँ स्वयं ही सुलझाएँ।
- परिवार के सदस्यों को यह शिक्षा प्रदान करें कि वे अपने पड़ौसियों से संपर्क रखें और पड़ौस के संसाधनों से मदद लें।

6) वैवाहिक परामर्श

वैवाहिक परामर्श का प्रयोग एक पति और उसकी पत्नी के बीच होने वाले झगड़ों को निपटाने के लिए किया जाता है। वैवाहिक झगड़े वस्तुतः किसी भी बात पर हो सकते हैं। कुछ ऐसे क्षेत्र जिनके कारण गंभीर कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं वे हैं, आर्थिक मामले, बालकों के पालन पोषण के तरीके, ससुराल के लोगों के प्रति कर्तव्यों की पूर्ति न करना, जीविका की माँगों को पूरा कर पाने की अक्षमता, विवाहेत्तर संबंध और यौन समस्याएँ। वैवाहिक झगड़ों के मुख्य कारण हैं पति और पत्नी की एक दूसरे से अवास्तविक अपेक्षाएँ और उनके व्यक्तित्व के लक्षण। इस संदर्भ में, यह आवश्यक है कि उनके संबंधों में स्थायित्व और सामंजस्य बनाए रखने के लिए पति तथा पत्नी दोनों के साथ काम किया जाए। वैवाहिक परामर्श एक ऐसी ही विधि है जिसका समाज व्यवहार में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है।

कार्यनीति

- दम्पत्ति के साथ घनिष्ठता बढ़ाएँ।

- पति/पत्नी को समस्या की पहचान कर पाने योग्य बनाने में सहायता कीजिए। उनसे चर्चा कीजिए और बताएँ कि इस समस्या का उनके संबंध पर क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
- दम्पत्ति को उनकी समस्या के कारण समझ सकने योग्य बनाएँ। कभी-कभी ये कारण वैवाहिक इकाई से बाहर के भी हो सकते हैं।
- उनका ध्यान इस बात की ओर दिलाएँ कि एक परिवार को चलाने में होने वाले रोजमर्रा के तनावों से निपट पाने की अक्षमता किस प्रकार पति और पत्नी के बीच के संबंधों को नष्ट कर देती है।
- उनकी सहमति से समस्या के उस हिस्से का चयन कीजिए जिसे उसकी तात्कालिकता और प्रबंधनीयता के आधार पर सुलझाया जाना है।
- दम्पत्ति को खुली, सीधी, सार्थक और संतोषजनक बातचीत के कौशल सिखाएँ। दम्पत्ति को इस योग्य बनाएँ कि वह आपकी उपस्थिति में ही अपने विचारों और भावनाओं को संप्रेषित करे। एक दूसरे से पुनः अंतःक्रिया स्थापित करने में उनकी मदद कीजिए।
- एक दूसरे के प्रति तदनुभूति विकसित करने में उन्हें सक्षम बनाएँ। अपने वैवाहिक जीवन के प्रारंभ में उनमें आपस में जो प्यार और सरोकार था उसको पुनः जागृत कीजिए।
- उनके परिवार में किन कारणों से तनाव उत्पन्न हो रहा है यह जानने में उनकी मदद कीजिए और उनको तनाव प्रबंधन की तकनीकें सिखाएँ।
- वैवाहिक संबंध के महत्वपूर्ण क्षेत्रों जैसे आपसी संबंध, यौन संबंध, वफादारी, स्नेह नेतृत्व, एक दूसरे के प्रति दायित्व और परस्पर सहयोग पर काम करें।
- अगले सत्र में आने से पहले उनको 'गृह कार्य' करने के लिए दीजिए।
- परिवार के अंदर (परिवार के बुजुर्ग) और परिवार के बाहर (पड़ौस) में सहायता प्रणाली को सशक्त कीजिए।
- उन्हें इस योग्य बनाएँ कि वे न केवल अपनी समस्या को ही सुलझाएँ बल्कि समस्या सुलझाने के कौशल भी सीखें। इससे भविष्य में बाहरी सहायता

पर निर्भर रहने की बजाय उन्हें अपनी समस्याएँ खुद ही सुलझाने में मदद मिलेगी।

7) विवाह पूर्व परामर्श

युवा व्यक्तिओं को विवाह से पहले स्थिति निर्धारण की आवश्यकता होती है। विवाह में और विवाह के पश्चात् पारिवारिक जीवन में होने वाली कई समस्याओं की उत्पत्ति विवाह से पहले उस दम्पत्ति द्वारा की गई अवास्तविक अपेक्षाओं और उनके विकृत विचारों के फलस्वरूप होती है। इस संदर्भ में, यह आवश्यक है कि जो युवा व्यक्ति विवाह बंधन में बंधने जा रहे हैं उनके लिए परामर्श सेवाएँ आयोजित की जाएँ। विवाह पूर्व परामर्श एक ऐसी ही विधि है जिसका समाज कार्य व्यवहार में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है।

कार्यनीति

- समस्या से जूझ रहे व्यक्तियों को विवाह का लक्ष्य और उद्देश्य वास्तविक अर्थों में समझने में मदद कीजिए।
- उन्हें उनकी उन अवास्तविक अपेक्षाओं, अपरिपक्व विचार पद्धति, अनुपयुक्त रवैयों से अवगत कराएँ जिन्हें उन्होंने अपने माता पिता से या जन मीडिया से सीखा है।
- उन्हें अंतःवैयक्तिक संबंध, संचार और समस्या समाधान के कौशलों के बारे में प्रशिक्षण दीजिए।
- एक दूसरे के प्रति तथा अपने माता पिता और ससुराल के सदस्यों के प्रति भी अपने दायित्वों और भूमिका को पहचानने में उनकी मदद कीजिए।
- विवाह में यौन संबंधों के शारीरिक और जैविक आयामों और महत्व को समझने में उनकी सहायता कीजिए।
- यौन संबंध तथा इससे जुड़ी हुई समस्याओं जैसे नंपुसकता और ठंडापन के बारे में उनकी अज्ञानता, भय, अपराधभाव, घृणा या चिंता को दूर कीजिए।
- बालकों के साथ परिवार बनाने के महत्व के बारे में उन पर प्रभाव डालें। हमारे देश के लिए उपयुक्त लघु परिवार के महत्व की विशेष जानकारी

दीजिए। परिवार नियोजन की विभिन्न संभावनाओं और विधियों के बारे में सूचित कीजिए।

संकलनवादी दृष्टिकोण

परिवार की समस्याओं को सुलझाने के लिए कोई एकल विधि नहीं होती। कोई भी सैद्धान्तिक प्रणाली पूरी तरह से समस्याओं की गतिकी को तथा उससे निपटने के तरीकों को स्पष्ट रूप से नहीं समझा पाती। अतः एक संकलनवादी दृष्टिकोण विकसित करने की ज़रूरत है। संकलनवादी दृष्टिकोण की विशिष्टता यह है कि इसमें समस्याग्रस्त व्यक्तियों के संदर्भ में सही दृष्टिकोण और तकनीकों का चयन करने के लिए अनेकों सिद्धान्तों एवं कौशलों के ज्ञान का प्रयोग किया जाता है।

परिवारों के साथ समाज कार्य व्यवहार विशिष्ट रूप से संकलनवादी दृष्टिकोण के आधार पर काम करता है। इसके स्पष्ट कारण है। परिवार एक प्रणाली है और गतिशील है। इसकी समस्याएँ बहुपक्षीय होती है। इन समस्याओं के कारण और परिणाम समझना जटिल होता है और उनसे निपटना मुश्किल होता है। अतः इसके लिए एक संकलनवादी दृष्टिकोण की ज़रूरत होती है जिसके द्वारा परिवार प्रणाली में परिवर्तन लाने के लिए विविध विषयों की जानकारी और कौशलों का एक साथ मिलाकर प्रयोग किया जाता है।

समस्या से प्रभावित व्यक्तियों को समस्याओं से निपटने में समाज कार्यकर्ता को व्यक्तियों, समूहों और समुदाय के साथ काम करने की समाज कार्य विधियों के किसी सम्मिश्रण का चयन करने योग्य होना चाहिए। उसको ऊपर वर्णित संकट अन्तःक्षेप, परिवार चिकित्सा, वैवाहिक परामर्श और विवाह पूर्व परामर्श जैसी अन्य कार्यनीतियों का भी चयन करने योग्य होना चाहिए।

सारांश

समुदाय में परिवार मूल संस्था होती है। अतः यह महत्वपूर्ण है कि हमें परिवार के साथ काम करने की जानकारी व कौशल प्राप्त हों। इस अध्याय में हमने पढ़ा है कि परिवार के सामने आने वाली समस्याएँ बहुपक्षी स्वरूप की होती है। हमने

यह भी जाना है कि परिवार एक प्रणाली के रूप में होता है और इसलिए परिवार के किसी एक व्यक्ति की समस्या के निपटान में परिवार प्रणाली के कई अन्य सदस्यों का सहयोग भी शामिल होता है। इसी संदर्भ में ही "परिवार के साथ समाज कार्य" नामक इस इकाई में व्यक्तिओं, समूहों और समुदाय के साथ काम करने की समाज कार्य विधियों की तथा संकट अन्तःक्षेप, परिवार चिकित्सा, वैवाहिक परामर्श और विवाह पूर्व परामर्श जैसी अन्य कार्यनीतियों की भी जानकारी दी गई है। इससे हमको परिवारों के साथ काम करने की जानकारी मिली है और इस कार्य को करने में रुचि उत्पन्न हुई है। वस्तुतः इनके अतिरिक्त कुछ अन्य उपागम भी हैं लेकिन वे इस इकाई के विषय क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आते। अपनी जानकारी को बढ़ाने के लिए आप 'कुछ उपयोगी पुस्तकें' शीर्षक के अंतर्गत वर्णित पुस्तकों से लाभ उठा सकते हैं।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

हर्बर्ट मार्टिन (1988), *वर्किंग विद चिल्डरैन एंड देयर फैमिलीज़,* लायकेम बुक्स इंक, शिकागो।

बुबेन्ज़ेर, डोनाल्ड एल एंड वेस्ट, जॉन डी (1993), *काउन्सलिंग कपल्स,* सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

केप्स, डोनाल्ड (ऍड्स) (1987), *द फेमिली थेरेपिस्ट,* फ्लेमिंग एच. रेवेल कम्पनी, न्यू जर्सी।

जॉन एंटोनी, डी. (1994), *स्किल्स ऑफ काउंसलिंग,* अनुग्रह पब्लिकेशन्स, नागरकोइल।

प्रशांथम, बी. जे. (1988), *इंडियन केस स्टडीज़ इन थेरेपिटिक काउंसलिंग,* क्रिश्चियन काउंसलिंग सेंटर, वेल्लोर।